(14)

IIJ Impact Factor : 2.193 ISSN-2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोध पत्रिका

(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

वर्ष-६ अंक-१२ भाग-४

जुलाई-दिसम्बर, २०१९

प्रधानसम्पादक

डॉ0 रामकेश्वर तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय

बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशक

वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी

वाराणसी

- किरातार्जुनीये तद्धितवृत्तेरर्थवैज्ञानिकत्वम् 220–228
  मनीषकुमारझा
- मध्यकालीन स्त्री–लेखन व अभिव्यक्ति के स्वर 229–232
  पूनम प्रसाद
- हठयोग में कुण्डलिनी का स्वरूप 233–236
  सूरज प्रकाश जोशी
- शृङ्गारस्य सर्जनात्मकमध्ययम् 237–240
  Dr. Menakarani Sahoo
- वर्तमान परिदृश्य में संत साहित्य की प्रासंगिकता 241–244
  जय प्रकाश विश्वासी
- प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रमिकों का हृदयद्रावक चित्रण 245–249
  निधी कुमारी
- अरुण कमल की जनपक्षधरता : 'पुतली में संसार के संदर्भ में 250–254
  पूनम कुमारी
- हिन्दी कथा साहित्य में मन्नू भंडारी के उपन्यासों का योगदान 255–257
  अनिल कुमार यादव
- शैव दर्शन में प्रमाण चिन्तन का स्वरुप 258–263
  अश्विनी कुमार
- संस्कृत चम्पू साहित्य एवं बिहार 264–266
  डॉ0 आभा तिवारी
- गीताशांकरभाष्य में ज्ञान का स्वरूप 267–270
  डॉ0 अनीता लोचिब
- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वराज्य दल का योगदान 271–273
  डॉ0 कंचन कुमारी
- गीतशङ्करकाव्योपरिगीतगोविन्दस्य प्रभावः समीक्षणम् 274–276
  डॉ0 अर्चना कुमारी
- विवेकानंद और वेदांत 277–283
  डॉ0 शशि रंजन त्रिपाठी
- योग अंतराय एवम् चित्त प्रसाधन के उपाय 284–288
  Bhavika Joshi & Dr. Brijesh Singh
- ग्रन्थसम्पादनशास्त्रस्य प्रमुखलक्षणानि 289–290
  विदुषि सुवर्णा हेगडे व Dr. Vinaykacharya Namannavar
- संस्कृत काव्यशास्त्र में अलंकार सिद्धांत 291–293
  डॉ0 कनक लता कुमारी
- वास्तुशास्त्रदृष्ट्या कक्षविन्यासविधिः 294–305
  डॉ0 रश्मिचतुर्वेदी
- 'पाँच आँगनों वाला घर' और भूमंडलीकरण 306–311
  रेखा साह

वास्तुशास्त्रदृष्ट्या कक्षविन्यासविधिः

डॉ0 रश्मिचतुर्वेदी*

वास्तुशास्त्रस्य ग्रन्थेषु भवने कक्षनिर्माणं दिशः स्वाभावानुसारं गुणधर्मानुसारं च तस्याः प्रकृतिवत् गतविधिं सशक्तं निर्माय तथा च व्यवस्थितरूपेण सञ्चालनाय उपयुक्तं स्थलं कथ्यते। वस्तुतः वास्तुशास्त्रं प्रत्येकं दिशि प्रकृतेः एवञ्च तस्याः गुणधर्मणाम् अधिकतमोपयोगाय तस्याः दिशः सम्मतकक्षव्यवस्थायाः निर्देशं प्रददाति। यस्याः प्रभावेण मनुष्यैः स्व-समस्तगतिविधीनां व्यवस्थापनं सम्यग्रूपेण कर्तुं शक्यते।

वास्तुपुरुषः सदैव भूमौ निवसति इयमस्माकं मान्यता अस्ति। एकस्मिन् वर्गाकारे (मण्डले) वास्तुपुरुषस्याकृतिः अनेन प्रकारेण स्थितं मन्यते यत् ईशानकोणे (उत्तरपूर्वदिशोः) तस्य शिरः, नैऋत्यकोणे (दक्षिणपश्चिमदिशोः) पादौ, शरीरस्य अन्ये भागाश्च अस्मिन्नेव वर्गे विभिन्नभागेषु अवस्थिताः वर्तन्ते। पञ्चचत्वारिंशद्देवताः वास्तुपुरुषं गृहीत्वा अस्यां स्थितौ स्थापयन्तः सन्ति, स्व-स्वस्थितेः अनुसारं विभिन्नक्षेत्राणां नियन्त्रणं कुर्वन्ति। वर्गः (मण्डलः) लघुकायः दीर्घकायो वा भवेत्, उपविभागाः चतुःषष्टिः एकाशीतिः वा भवेयुः परमस्य नियन्त्रणकर्तृणां देवतानां संख्या सदैव पञ्चचत्वारिंशदेव भवति। तेषां सापेक्षिकस्थितिः अपि सैव भवति, केवलं तस्य क्षेत्रविस्तारोऽधिको जायते। एतेषु महत्त्वपूर्णप्रमुखदेवताः वर्तन्ते ये मुख्यदिशामधिपतयः तस्य क्षेत्रस्य नियन्त्रणकर्तारश्च वर्तन्ते। ते च -

देवताः	दिक्पतयः	कारकाः (नियन्त्रणम्)
इन्द्रः	पूर्वा	समग्र-समृद्धिः उन्नतिश्च
अग्निः	आग्नेया	अग्निः तेजश्च
यमः	दक्षिणा	मृत्युः
दानवः	नैऋत्या	शुद्धता स्वच्छता च
वरुणः	पश्चिमा	जलं वर्षा च
वायुः	वायव्या	वायुः
कुबेरः	उत्तरा	धन-सम्पत्तिः समृद्धिश्च
ईश्वरः	ईशाना	धर्मः आराधना मोक्षश्च
ब्रह्मा	मध्यभागः	सृष्टेः जनकः अध्यात्मज्ञानञ्च

इमे देवताः स्व-स्वक्षेत्रस्य अधिपतिरूपेण विराजन्ते। सौरमण्डले स्थिताः वातावरण-प्रकृत्योः अनुसारं विभिन्नावयवानां प्रतीकस्वरूपाश्च विद्यन्ते। अतः तेषामवयवानां नियन्त्रणकर्तारः मन्यते। एतदर्थं भवनं निर्मातुं भूखण्डस्य चयनसमये, गृहनिर्माणकार्यारम्भादिषु अवसरेषु देवतानां महत्ताः स्मर्यन्ते। तथैव गृहे विविधकार्याणां कृते भिन्न-भिन्नप्रकोष्ठाः एतादृश्यां दिशि विशिष्टस्थितौ च निर्माणीयाः यत् तेन कार्येण तत्क्षेत्राधिपतिः देवता रुष्टं न भवेत् प्रत्युत् प्रसन्नं भूत्वा स्व-नियन्त्रस्य सर्वासां भौतिकवस्तूनाम् ऊर्जानां वा लाभः गृहस्वामिने प्रदद्युः, येन कारणेन सः परिवारेण साकं गृहे सुखपूर्वकं वसितुं शक्नुयात्। यस्याः दिशाधिपतिः या देवता तस्य नियन्त्रणे यः पदार्थः ऊर्जा वा अस्ति तस्य स्वभावानुसारं प्रकृत्यानुसारञ्च कस्यां दिशि कस्मै कार्याय प्रकोष्ठः कस्यां स्थितौ निर्माणीयः, कस्यां स्थितौ च न निर्माणीयः, अस्य स्पष्टोल्लेखः प्राचीनशास्त्रेषु प्राप्यते। अनेन सहैव यदि कश्चन प्रकोष्ठः निषिद्धक्षेत्रे निर्मीयते चेत् तस्य सम्भावितदुष्परिणामाः अप्युक्ताः वर्तन्ते। विश्वकर्माप्रकाशे कथ्यन्ते-

*प्रवक्ता-आचार्या ज्योतिष-विभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-द्वादश पुष्प

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

प्रधान सम्पादक
प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय
कुलपति

सम्पादक
डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित विश्वविद्यालय)
नव देहली-110016

प्रकाशक-
वास्तुशास्त्र विभाग
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित विश्वविद्यालय)
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११००१६

ISSN : 0976-4321

© प्रकाशक

संस्करण – २०१९

मूल्य २००/-

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का अनुवाद या किसी भी रूप में उपयोग करना सर्वथा वर्जित है।

मुद्रक:
गणेश प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली-११००१६
९८११६६३३९१/९३

12. द्वार, गवाक्ष, वरामदा एवं आँगन का विचार (भारतीय वास्तुशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में)	प्रो. हंसधर झा अध्यक्ष- ज्योतिष विभाग राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर	93–109
13. श्रौतवेदी के निर्माण में वास्तुसिद्धान्त	विद्यावाचस्पति डॉ.सुन्दरनारायणझा सहाचार्य, वेदविभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16	110–116
14. वास्तुशास्त्र में भूपरिग्रह विचार	डॉ. रश्मि चतुर्वेदी सहाचार्या (ज्योतिष विभाग) श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16	117–129
15. लक्ष्मीनारायण मन्दिर दिल्ली का वास्तुशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन	डॉ.देशबन्धु सहायकाचार्य, वास्तुशास्त्रविभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16 प्रिया कौशिक शोध-छात्रा, वास्तुशास्त्रविभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ, नई दिल्ली–16	130–145
16. देवालय और उनके शिखर विधान	डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' वास्तुशास्त्रविद्, विश्वाधारम्, 40 राजश्री कॉलोनी विनायकनगर, उदयपुर–313001 राजस्थान	146–155
17. शिक्षण विधियों में नवाचार: वास्तुशात्र के सन्दर्भ में	डॉ ज्ञानेंद्र कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय दिल्ली विश्वविद्यालय	156–163
18. प्रासाद निर्माण में शिखर विधान	डॉ. ब्रह्मानन्द मिश्रा सहायकाचार्य, ज्योतिष विभाग राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, एकलव्य परिसर, अगरतला, त्रिपुरा।	164–170

वास्तुशास्त्र में भूपरिग्रह विचार

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

दिक् सम्मत भवन की स्थिति और विन्यास का उसमें निवास करने वालों के जीवन पर सीधा और स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। आदि काल से हमारे ऋषि मुनियों ने इन प्रभावों का अध्ययन किया है और संचित अनुभवों को वेद-पुराण आदि शास्त्रों में वर्णित किया है। इस ज्ञान को 'वास्तुशास्त्र' कहा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि वास्तु के नियमानुसार बने भवन में निवास करने से स्वास्थ्य व सम्पदा की वृद्धि, ज्ञान की प्राप्ति, सन्तान सुख की प्राप्ति होती है, जीवन सुखी एवं शान्तिमय बनता है तथा व्यक्ति समस्त ऋणों से मुक्त रहता है शास्त्रों की सम्मति की उपेक्षा करने से अनावश्यक यात्राओं, अपयश, अनेक दुखों व निराशाओ का सामना करना पड़ता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" वैदिक उद्घोष का पालन करते हुए समस्त लोक के कल्याण एवं सुख समृद्धि की कामना के साथ सभी ग्राम, नगर एवं भवन वास्तुशास्त्र के नियमानुसार बनाने की परिकल्पना इस शास्त्र का प्रमुख उद्देश्य है। यथा–

सुखं धनानि बुद्धिश्च सन्तति सर्वदानृणाम्।
प्रियान्येषां च संसिद्धिं सर्वं स्यात् शुभलक्षणम्।।
यात्रा निन्दित लक्ष्यमत्र तहि तेषां विघातकृत।
अतः सर्वमुपादेयं यद्भवेत् शुभलक्षणम्।।
देशः पुरनिवासश्च समा वेश्मासनानि च।
यद्यदीदृशमन्यच्च तत्तच्छ्रेयस्करं मतम्।।
वास्तुशास्त्रादृते तस्य न स्याल्लक्षणनिश्चयः।
तस्माल्लोकस्य कृप्या शास्त्रमेतदुदीर्यते।।[1]

भू परिग्रह से तात्पर्य है "भूमि का परिग्रहण अर्थात् उचित भूमि का चयन करना।" किसी भी नगर, ग्राम अथवा भवन के लिए सर्वप्रथम भूमि का चयन किया जाता है। भूमि की उपयुक्तता के लिए सर्वप्रथम भूमि का परीक्षण किया जाता है, इस परीक्षण में इसके कुछ दोष दृष्टिगोचर हो तो इन दोषों को दूर करने के लिए वास्तुशास्त्रोक्त विधि से भूमि का शोधन किया जाता है भूमि के आकार, वर्ण एवं शब्दादि के आधार पर उत्तम प्रकार से विद्वान स्थपति से परीक्षण करवा कर भूमि परिग्रहण का निर्देश वास्तुशास्त्र में दिया गया है। यथा–

---

1. स.सूत्रधार प्र.अ. श्लोक-2, 3, 4, 5